आज के समय में सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार "बालकनामा" लिखकर प्रकाशित करने लगे।

बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाजी बच्चों का संघ

बालकनामा

आप भी बन सकते हैं
बालकनामा अखबार का हिस्सा
1 लिखकर
2 खबरों की लीड देकर
3 आर्थिक रूप से मदद करके

बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें - 31 बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644471
ईमेल- editorbalaknama@gmail.com

अंक-114 | सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार | सितंबर 2023 | मूल्य - 5 रूपए

जी 20 सम्मेलन पर बच्चों में जिज्ञासा

सड़क और कामकाजी बच्चों को कार्यशाला से मिली महत्वपूर्ण जानकारी

बालकनामा रिपोर्टर किशन, असलम, हंसराज, नितीश

दिल्ली अपने पहले जी20 शिखर सम्मेलन की मेजबानी के लिए तैयारी कर रही है। शिखर सम्मेलन में 20 सदस्य देशों सहित 40 देशों के नेता और प्रतिनिधि शामिल होंगे। हालाँकि शिखर सम्मेलन की मेजबानी के लिए बहुत सारी व्यवस्थाएँ की जा रही हैं, लेकिन शहर में बहुत से लोग, विशेषकर मलिन बस्तियों में रहने वाले सड़क एवं कामकाजी बच्चे नहीं जानते कि शिखर सम्मेलन आखिर क्या है? शिखर सम्मेलन के बारे में सड़क पर रहने वाले बच्चों को शिक्षित करने के लिए, सामाजिक संस्था चेतना ने शहर की विभिन्न मलिन बस्तियों में कार्यशालाओं का आयोजन आरम्भ किया।

इसे जी20 क्यों कहा जाता है? हम (भारत) उन सभी 40 देशों के लोगों को कैसे समायोजित कर सकते हैं, वे सभी कहाँ रहेंगे? क्या हम इन लोगों से मिल सकते हैं?, क्या वे वही खाना खाएंगे जो हम भारतीय खाते हैं? ये कुछ ऐसे प्रश्न हैं जो दिल्ली के मलिन बस्तियों के बच्चों द्वारा उठाए गए थे, जिन्हें जी20 के बारे में जागरूक करने के उद्देश्य से पिछले सप्ताह कार्यशालाओं के माध्यम से जानकारियां दी गई।

ज्योति, जो सामाजिक संस्था चेतना में शिक्षिका के पद पर कार्यरत हैं, ने पिछले सप्ताह कीर्ति नगर में कमला नेहरू कैंप में कार्यशाला के माध्यम से बच्चों को बताया कि पिछले महीने से, पूरे शहर को जी20 के बैनर, होर्डिंग से सजाया जाना शुरू हो गया है। हर जगह इससे कई बच्चे हैरान रह गए और

On other side of divide, slum kids want to know more about summit

Ridhima.Gupta@timesgroup.com

New Delhi: Slum children who were curious about the city's dock-up for G20 Summit had lots of questions about what was happening in Delhi. A child rights non-government organisation, called CHETNA, decided to answer them.

The NGO conducted several workshops across the city for the children. The kids had lots of questions: Why is the event called G20? How can we (India) accommodate people from all the countries who are coming here? Where will they all stay? Can we meet these people? Will they eat the same food that we Indians eat? There were many more questions. Some of these were linked to lockdown fears.

Jyoti, who is a street children educator for the NGO, last week did a workshop in Kamla Nehru Camp in Kirti Nagar. Since last month, the entire city has started to get dressed up with banners, hoardings of G20 are up everywhere. She told TOI that all this activity had many children puzzled and they have started asking questions about the event. "That is when we realised that we have to make the children, especially those who come from slums, aware about the summit," she said.

"The more we educate them, the more interesting their questions become. While some children just wanted to know about where so many cars will be parked and where the guests from different countries will stay, some children expressed their apprehensions hovering around the summit," Jyoti said.

At a workshop at the CHETNA centre, Nitish (11), a Class 8 student, asked his educator: "Why are our schools closing for the summit? Is it like a festival that will now happen every year?"

Another boy, Anshu (12), a Class 8 student, asked: "Will there be a lockdown in Delhi and will it affect my father, who is a daily wage labourer, in the same way as the previous lockdown during Covid?"

At another centre in Jawahar Camp, Kushboo Jha, another educator, said: "Making children aware of G20 is a challenge. Especially for those who come from weaker economic families, some had recently joined school. But instead of finding this topic difficult to understand, the children found it interesting and were curious to know more about it."

She added: "We tried to make the workshop interesting by making them draw and paint also."

From telling the children what the G20 summit is to how it will help the country, the educators from the NGO are trying to make children from the slums more aware of the events in the country, said Sanjay Gupta, director of CHETNA.

"We are also making children aware of traffic and other restrictions and asking them to avoid any mishappening as a protection system especially since the police will be busy in the management of the event," he said.

The NGO conducted several workshops across the city for the children

उन्होंने जी20 के बारे में सवाल पूछना शुरू कर दिए। ज्योति ने कहा, 'तभी हमें एहसास हुआ कि हमें बच्चों को, खासकर झुग्गी-झोपड़ियों से आने वाले बच्चों को जी20 शिखर सम्मेलन के बारे में जागरूक करना चाहिए।' ज्योति आगे कहती हैं, 'हम जितना अधिक जानकारी या शिक्षा देते हैं, बच्चों की दिलचस्पी सवालों में उतनी ही बढ़ती है ।जबकि कुछ बच्चे सिर्फ यह जानना चाहते थे कि इतनी सारी कारें कहां पार्क की जाएंगी और विभिन्न देशों के मेहमान कहां रुकेंगे?'

चेतना एनजीओ के लर्निंग सेंटर पर एक कार्यशाला के दौरान, आठवीं कक्षा के छात्र नीतीश (11 वर्ष) ने पूछा की ह्लहमारे स्कूल शिखर सम्मेलन के लिए क्यों बंद हो रहे हैं? क्या यह एक त्यौहार की तरह है जो अब हर साल होगा? इसके अलावा 8वीं कक्षा की छात्रा, अंशू (12 वर्ष) चिंतित थी और उसने ज्योति से सवाल किया की, 'क्या दिल्ली में तालाबंदी होगी और क्या इसका असर उसके पिता पर पड़ेगा, जो एक दिहाड़ी मजदूर हैं, उसी तरह जैसे पिछले लॉकडाउन तालाबंदी के दौरान हुआ था?'

संस्था के लर्निंग सेंटर जवाहर कैंप में शिक्षिका खुशबू झा ने कार्यशाला का आयोजन किया और उन्होंने कहा, 'बच्चों को जी20 के बारे में जागरूक करना चुनौतीपूर्ण रहा खासकर उनके लिए जो कमजोर आर्थिक परिवारों से आते हैं, उनमें से कुछ ने हाल ही में स्कूल ज्वाइन किया है। लेकिन बच्चों को यह विषय समझने में कठिनाई होने के बजाय आकर्षक लगा और वे इसके बारे में और अधिक जानने के लिए उत्सुक थे।' खुशबू ने बताया, 'हमने ड्राइंग और पेंटिंग के जरिए कार्यशाला सत्र को रुचिकर और ज्ञानवर्धक बनाने की भरसक प्रयास किये।'

बच्चे यह जानने के लिए उत्सुक थे कि दिल्ली में क्या होने वाला है क्योंकि बहुत सारी तैयारी चल रही है और विद्यालयों ने छुट्टियों की घोषणा कर दी गई है। हमने उन्हें जानकारी देने के बारे में सोचा क्योंकि जी20 एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम है और बच्चों को इसके बारे में जानने का अधिकार है।

चंद्रयान-3 : सड़क और कामकाजी बच्चों में आई खुशी की उत्साही लहर

रिपोर्टर- हंसराज, असलम, सरिता, किशन

चंद्रयान 3 को लेकर भारत वासियों एवं देश में रहने वाले बच्चों में गजब का उत्साह एवं खुशी का माहौल है। जैसा कि पूरा भारत जानता है की चंद्रयान 3, 23 अगस्त को 6:04 मिनट पर चाँद के दक्षिणी ध्रुवीय क्षेत्र में सॉफ्ट लैंडिंग के साथ लैंड हुआ है। चंद्रयान-3 के अंतर्गत चंद्रयान 3 लेंडर का नाम विक्रम रखा गया है और रोवर को प्रज्ञान नाम दिया गया है। आइए जानते हैं की विक्रम और प्रज्ञान का मतलब क्या है?

चंद्रयान-3 के तीन घटक (कॉम्पोनेंट्स) है परोपल्सन माड्यूल, लैंडर और रोवर। अब हम यह जानते हैं कि चंद्रयान-3 का मुख्य उद्देश्य क्या है? चंद्रयान 3 के मुख्य उद्देश्य चंद्रमा पर संभावित पानी, बर्फ और संसाधनों के लिए उसके दक्षिणी ध्रुव के पास स्थायी रूप से छायां वाले क्षेत्रों की जांच करना है। चंद्रयान-3 को लेकर कामकाजी बच्चों से भी चर्चा की गई जिसमें एक-एक करके बच्चों ने अपने विचार साझा किये।

13 वर्षीय राखी ने साझा किया कि मैं वर्तमान में दिल्ली में रहती हूँ और कक्षा सातवीं में अध्ययनरत हूँ, चंद्रयान 3 चंद्रमा पर पहुंच गया है, और मुझे इस बात की काफी खुशी है। मेरा सपना था कि मैं एक शिक्षक बनूँ पर जब मुझे पता चला कि चंद्रयान-3 चांद पर पहुंचा है तो मेरा भी निर्णय बदल गया और अब मैं सोचती हूँ की क्यों ना मैं भी देश का नाम रोशन करूं? और अब मैंने सोचा है कि मैं भी एक साइंटिस्ट बनूंगी।

गुड़गांव में रहने वाली मनीषा ने बताया कि जैसा कि सब जानते हैं चंद्रयान 3 चंद्रमा पर पहुंच गया है पर जब सबकी नजर इस खबर की ओर थी तो हमें यह लग रहा था कि ऊपर पहुंचकर कहीं वह क्रैश ना हो जाए, क्योंकि पहले चंद्रयान 2 लांच हुआ था तो वह चंद्रमा पर पहुंचकर क्रैश हो गया था पर जब चंद्रयान-3 चंद्रमा पर सफलतापूर्वक पहुंच गया तो हमें काफी खुशी हुई।

नोएडा में रहने वाले 14 वर्षीय दीपक ने कहा की चंद्रयान 3 को लेकर पूरे भारत को खुशी है और हम भी काफी खुश हैं किसी उद्देश्य को पूरा करने में काफी मेहनत लगती है यदि वह पूरी ना हो पाए तो काफी दुख भी होता है, पर अब अंततः चंद्रयान-3 चंद्रमा पर सफलतापूर्वक पहुंच गया है जिसके लिए हम भारतीय

अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO)के वैज्ञानिक को तहे दिल से शुक्रिया अदा करते हैं।

बदायूं में रहने वाला रमेश ने कहा जब हम कोई कार्य को करते हैं यदि वह सफल नहीं हो पाता है तो हमें कभी भी हार नहीं माननी चाहिए, और मुझे काफी खुशी है की इसरो के वैज्ञानिकों ने हार नहीं मानी वे अपनी मेहनत पर अडिग रहे और परिणामस्वरूप उनकी मेहनत का फल चंद्रयान 3 के रूप में सफल हो गया।

जयपुर में रहने वाले 12 वर्षीय बालक ने उत्सुकता से बताया की हमने अभी तक यह सुना है कि एलियन भी होते हैं पर एलियन देखे नहीं है पर सुनने में आया है कि चाँद पर एलियन भी उपस्थित हैं विक्रम चंद्रमा की जानकारी प्राप्त करके भारत में पहुंचा रहा है और यदि चंद्रमा पर एलियन उपस्थित है तो हम एलियन के बारे में भी जान पाएंगे।

दिल्ली की बस्ती में रहने वाली 11 वर्षीय बालिका ने बताया कि हमें खुशी है की हम भारत में रहते हैं और कौन नहीं

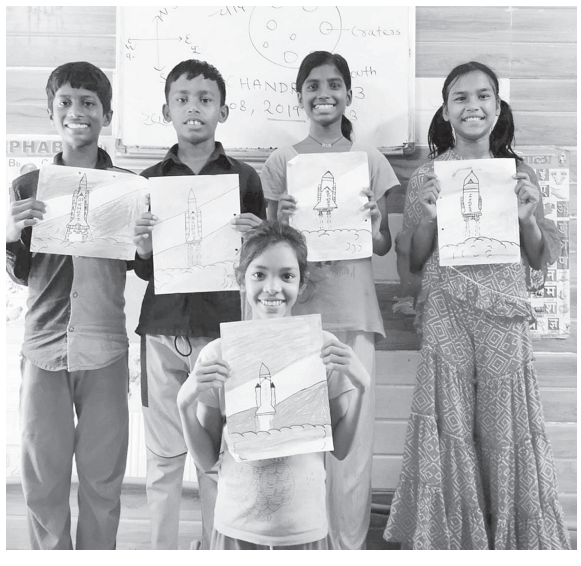

चाहता कि अपने देश की तारीफ हो और चंद्रयान 3 को लेकर सभी को खुशी है पर हमें इस बात की अधिक खुशी है कि चंद्रयान 3 चंद्रमा पर अंततोगत्वा पहुंच गया है और परदेश के लोग भी भारत की प्रशंसा कर रहे हैं।

13 वर्षीय रानी ने बताया जैसा कि सभी जानते हैं साइंस म्यूजियम में विज्ञान से संबंधित काफी महत्वपूर्ण बातें वहां पर उपस्थित हैं। चंद्रयान 3 के द्वारा जितनी भी खनिज, फोटोग्राफ आदि जानकारी आयेगी तो हम साइंस म्यूजियम जाएंगे और चंद्रयान 3 के बारे में और अच्छे से जान पाएंगे कि चंद्रमा पर क्या-क्या चीजें उपस्थित हैं।

चंद्रयान को लेकर बच्चे एवं पत्रकार काफी खुश थे और इस दौरान बच्चों ने इस उपलक्ष्य में चंद्रमा के कुछ चित्र बनाकर अपनी खुशी जाहिर की।

अभिभावकों को चकमा देकर स्कूल न जाकर, पार्क में अपना मनोरंजन करते है बच्चे

बातूनी रिपोर्टर अल्ताफ व रिपोर्टर किशन

बच्चों के लिए पढ़ाई कितनी जरुरी है, यह बात उनको शायद अभी समझ नहीं आ रही है। दिल्ली की कुछ ऐसी बस्ती हैं जहाँ बच्चे पढ़ाई से दूर भागने के बहाने ढूंढते रहते हैं। बालकनामा पत्रकारों ने इन बच्चों से मिलकर बात की तो पता चला कि जब बच्चों का पढ़ाई में मन नहीं लगता हैं तो वे इससे दूर भागने के बहाने ढूंढते रहते हैं। बातूनी रिपोर्टर अंकुश (परिवर्तित नाम) ने बताया कि जब बच्चों का स्कूल जाने का मन नहीं करता तो बच्चे अपने माता पिता से झूठ बोलकर और स्कूल की ड्रेस पहन कर कहीं और निकल जाते हैं। बच्चे स्कूल के समय तैयार हो जाते हैं पर जब इनका स्कूल जाने का मन नहीं करता तो यह अपने दोस्तों के साथ स्कूल से दो से तीन किलोमीटर दूरी पर बने पार्क में चले जाते हैं। बच्चे पार्क में तब तक खेलते रहते हैं जब तक स्कूल की छुट्टी नहीं हो जाती। बच्चे पार्क में खेलते हैं, आराम करते और अपना घर से लाया हुआ लंच भी करते हैं। इनमें से अधिकतर बच्चों के माता पिता सुबह इनको स्कूल भेजकर काम पर चले जाते हैं। इस कारण उनको पता ही नहीं चलता कि उनके बच्चे स्कूल के नाम पर कहीं और घूम रहे हैं। बच्चे ऐसा तभी करते हैं जब उनका स्कूल जाने का मन नहीं करता और वे घर न जाकर पार्क में इसीलिए जाते हैं ताकि उनके माता पिता को पता न चले कि वो स्कूल नहीं गए हैं। यदि बच्चे घर वापस आ जाएंगे तो आसपास के पड़ोसी और रिश्तेदार उनके माता-पिता को बता देंगे कि उनका बच्चा स्कूल नहीं गया। इसलिए स्कूल का समय वह पार्क में बिताते हैं और स्कूल की छुट्टी होते ही वह घर की ओर चले जाते हैं। जिन बच्चों की माता घर पर रहती

हैं उन्हें भी इस बात की भनक नहीं लगती कि उनका बच्चा स्कूल नहीं जाकर कहीं और गया है। ये बच्चे इतने शातिर हैं कि स्कूल के अध्यापक अध्यापिका को भी लगता है कि किसी कारणवश वह स्कूल नहीं आए हैं। यह बच्चे जब अगले दिन स्कूल जाते हैं तो कुछ ना कुछ बहाना बना देते हैं जिससे अध्यापक अध्यापिका को विश्वास हो जाता है और इन बच्चों की ये हरकते किसी के सामने नहीं आ पाती हैं। जब कभी बच्चों के स्कूल में पेरेंट्स मीटिंग होती है तो कुछ बच्चों के माता-पिता स्कूल जाते हैं और जब अध्यापिका बच्चों के माता-पिता से पूछती हैं कि आपका बच्चा इतनी छुट्टी क्यों करता है तब उनको हकीकत पता चलती है। अध्यापिका के ऐसा कहते ही माता-पिता के होश उड़ जाते हैं कि वह तो रोज अपने बच्चे को स्कूल भेजते हैं और जब अध्यापिका उनको स्कूल की अटेंडेंस दिखाती हैं तब माता-पिता को भी विश्वास होता है कि बच्चे स्कूल के नाम पर पता नहीं किधर घूमते रहते हैं। बच्चों का कहना है कि माता-पिता को अपने काम के साथ-साथ उनके स्कूल एवं अन्य कार्य की भी जानकारी होनी चाहिए ताकि बच्चे गलत न कर पाए और न गलत सोच पाएं।

झुग्गियों के उजाड़ने पर, एक पल में भंग हो गया 60 परिवारों का हौसला

बातूनी रिपोर्टर आशीष व रिपोर्टर किशन

हम जानते हैं कि किसी की मजबूरी का फायदा नहीं उठाना चाहिए, लेकिन यह भी तो हर इंसान की सोच पर निर्भर होता है। बालकनामा पत्रकार ने नोएडा की एक मूर्ति के पास स्थित झुग्गी बस्ती में रहने वाले बच्चों से उनकी समस्या पर बात की तो बच्चों ने बताया कि यहां पर 60 झुग्गियां थी। यह जमीन पहले से सरकार ने खरीद ली थी, लेकिन इस गांव के लोगों और खेत मालिक ने दोबारा यह जमीन बेचकर इस पर कब्जा कर लिया था। मालिक ने आसपास काम करने वाले लोगों को इस जमीन पर झुग्गी बनाकर किराए पर देने लगा और लोग भी इन झुग्गियों में रहने लगे। इन झुग्गियों में कई वर्षों से अधिकतर परिवार रह रहे थे, लेकिन जब सरकार के अधिकारियों ने इस जमीन पर कुछ बनाने का सोचा तो सबसे पहले इस जमीन पर बानी झुग्गियों को हटाने का आर्डर आया। जिसके कारण हम लोगों को हाल ही में यह झुग्गियां हटानी पड़ी। जब लोगों ने झुग्गी खाली की तो वह आसपास के गांव में किराए पर घर लेने पहुंचे। जैसे ही किराए के कमरे की मांग बढ़ी इन गांव के लोगों ने कमरे का किराया इतना अधिक कर दिया कि इन लोगों को किराए पर कमरा लेने के लिए भी सोचना पड़ा। झुग्गी टूटने से पहले कमरे का किराया 2000 रूपए महीना था और झुग्गी टूटते ही गांव के लोगों ने इनकी परेशानी ना देखकर कमरे का किराया 3500 रूपए महीना कर दिया। बच्चों ने बताया कि हम लोग झुग्गी में इसीलिए रहते थे कि झुग्गी में किराया कम लगता है और हम रोज के कुछ पैसे भी बचा सकते हैं ताकि अचानक से कोई परेशानी आ जाए तो हमारे पास कुछ पैसे हों। लेकिन अब कमरे का किराया इतना ज्यादा है कि हमें बहुत परेशानी हो रही है।

बात करने के दौरान बालिका ने बताया कि हम बहुत सालों से इस झुग्गी में रहते थे और इसी झुग्गी बस्ती में हमारे कई रिश्तेदार और दोस्त भी रहते थे, जिनके साथ हम कुछ ना कुछ खेल खेला करते थे। अब इन किराए के कमरों में आकर ना कोई जानने वाला है और ना पहचानने वाला और ना ही हमारे साथ कोई खेलने वाला है। यहां पर के मालिकों का भी व्यवहार अच्छा नहीं है। इनमें से कुछ परिवारों का कहना है कि यदि हमें ऐसी ही परेशानियों का सामना करना पड़ा तो मजबूरन हम सभी लोगों को यहां से गांव की ओर जाना पड़ेगा।

नुहू मेवात में बच्चों की चीखें: हादसों का नुकसान किसकी जिम्मेदारी?

ब्यूरो रिपोर्ट

जैसा कि आपको पता ही होगा कि गुड़गांव के नुहू मेवात धर्म के ऊपर बहुत ज्यादा लड़ाई दंगे हुए, जिस कारण सड़क पर रहने वाले लोगों को बहुत परेशानियों का सामना करना पड़ा। हमारे बालकनामा पत्रकारों ने एक बच्चे मोहम्मद कैफ से पूछा कि आपको किन परेशानियों का सामना करना पड़ा तो मोहम्मद कैफ ने बताया कि भैया हमारी सिलाई की दुकान है और हमारे यहां हिंदू मुस्लिम पर लड़ाई चल रही है, जिस कारण जितने भी मुस्लिम हमारे इधर रहते हैं उन सभी को मारपीट कर घर से भगा रहे हैं और हमारी दुकानें, हमारा सामान सब जला दे रहे हैं। अगर हम लोग इसे कुछ कहते हैं तो लोग हमारे साथ हाथापाई करते हैं और हमारी गाड़ी, सामान आदि जला देते हैं, ताकि हम कहीं जा ना पाएं। पत्रकार ने एक बच्चे तन्मय से पूछा तो उसने बताया कि भैया हमारे यहां कई झुग्गियों में मुस्लिम लोग रहते हैं। कुछ बजरंग दल के लोगों ने इन झुग्गियों को तोड़ दिया और इन्हें जला दिया। जिस कारण यह हम सबको अपने-अपने गांव भागना पड़ा। इन लड़ाई दंगों में हमारा स्कूल भी बंद हो गया और हमें हमारे घरवालों के साथ गांव जाना पड़ा। अब हमारी पढ़ाई भी रुक गई और लोगों का बहुत नुकसान भी हो गया है। हम यह चाहते हैं कि बिना किसी दोष के हमारे साथ जिसने बहुत गलत किया गया है और हमें नुकसान पहुंचाया है तो उसकी भरपाई को जाय।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

चेतना संस्था के समर्थन से, परवीन का सपना होगा हकीकत

बातुनी रिपोर्टर परवीन,
बालकनामा रिपोर्टर सरिता

11 वर्षीय परवीन ने बताया कि मेरी मम्मी कुछ सालों से बीमार रहती हैं। मेरे पापा बहुत दारू थे और मेरी मम्मी का बिलकुल भी ध्यान नहीं रखते थे। मेरी मम्मी बीमारी के कारण मर गई और मेरे पापा मुझे छोड़कर चले गए। तब से मेरी परवरिश मेरे नाना जी ने की अब मैं अपने नाना के साथ रहता हूं।

मेरे नाना के पास पैसे ना होने के कारण वो मेरा दाखिला स्कूल में नहीं करवा पा रहे हैं। मेरा भी मन स्कूल जाने का करता है। मैं भी स्कूल जाकर पढ़ना चाहता हूं। अब ना तो मेरी मम्मी है और ना तो मेरे पापा और मेरे नाना बहुत गरीब हैं।

मेरे घर का खर्चा ही बहुत मुश्किल से चलता है तो इसमें पढ़ाई लिखाई का खर्चा कहां से आएगा। कभी-कभी मजदूरी का काम मिलता है तो मेरे नाना जी करने चले जाते हैं और काम ना होने के कारण उनको कोई काम नहीं मिलता है।

घर की परिस्थिति खराब होने की

कारण परवीन स्कूल पढ़ने नहीं जा सकता। परवीन की आर्थिक स्थिति बहुत खराब है। उसकी पढ़ने की ललक देखकर पत्रकार ने उसे अपने एनजीओ के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि हमारी चेतना एनजीओ सड़क एवं कामकाजी बच्चों को पढ़ाती है और हमारी संस्था की मदद से बच्चों का स्कूल में दाखिला भी कराया जाता है। स्कूल में अपने पढ़ने की सपने को लेकर परवीन अब चेतना एनजीओ का सदस्य बन गया है और सेंटर में पढ़ने आने लगा है।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

बच्चे के अपहरण होने की सूचना फैलने पर दहशत में आए सड़क एवं कामकाजी बच्चे

ब्यूरो रिपोर्ट

बालकनामा रिपोर्टर काजल ने जयपुर की विभिन्न बस्तियों का दौरा किया और बच्चों से उनके और आसपास के वातावरण के बारे में जानने का प्रयास किया। बातचीत के दौरान जयपुर की एक कच्ची बस्ती में बच्चे के अपहरण होने का मामला सामने आया। इस बारे में बातूनी रिपोर्ट सोनिया ने बताया कि बच्चों ने जब से अपहरण घटना के बारे में सुना है वह बहुत डर गए हैं। सब रोज स्कूल जाते थे, लेकिन अभी कुछ दिनों से नहीं जा रहे हैं। क्योंकि बस्ती से कुछ दूरी पर एक बच्चे का अपहरण हो गया था और उस बच्चे को तो उसके पिता विद्यालय छोड़ने और लेने जाते थे तब भी उसका अपहरण हो गया। और हम सब तो टैक्सी से विद्यालय जाते हैं क्योंकि हमारा विद्यालय दूर है और रास्ते में जंगल भी आता है इसलिए अब हमको बहुत डर लगता है कि कोई हमें उठाकर ना ले जाए या हमारा अपहरण ना कर ले। इसलिए हम स्कूल नही जाएंगे। बच्चे के अपहरण होने की सूचना फैलने के बाद आसपास के इलाकों में रहने वाले बच्चों में दहशत फैल गई। बच्चों को सहज करने के लिए रिपोर्टर काजल ने बच्चों को बताया कि आप अपना स्वयं का ध्यान रखें और हर बात अपने माता-पिता को बताएं। यदि कोई भी अनजान व्यक्ति आपको विद्यालय से लेने आए तो उसके साथ नहीं आना है और स्कूल शिक्षक को पूरी बात बताए। इस घटना के बाद स्कूल स्टाफ, बच्चों और अभिभावकों को उचित सलाह दी गई, जिससे बच्चे फिर से विद्यालय जाने लगे हैं।

15 वर्षीय बालक माता-पिता की सहायता के लिए सब्जी का ठेला लगाने को मजबूर

बातूनी रिपोर्टर विक्की
बालकनामा रिपोर्टर असलम

हरियाणा के पत्रकार असलम ने जब घासोला की झुग्गियों का दौरा किया तो हमारे पत्रकारों को पता चला कि एक बच्चा जिसका नाम विक्की है, उसकी उम्र 15 साल है। वह एक टांग से अपाहिज है, जिस कारण उसको बहुत परेशानियों का सामना करना पड़ता है। विक्की के पिताजी एक मॉल में गार्ड की नौकरी करते हैं और उनकी माताजी कोठियों में खाना बनाने का काम करती है। लेकिन इस समय विक्की के माता-पिता का काम नहीं चलने के कारण उनको दो वक्त की रोटी भी नहीं नसीब होती है। मजबूरीवश विक्की ने सब्जी का ठेला लगाकर सब्जी बेचने का काम शुरू कर दिया। विक्की के पिताजी ठेली ले जाकर एक जगह खड़ी कर देते हैं

और विक्की एक कुर्सी पर बैठकर सब्जी बेचता है। विक्की को अपने अपाहिज होने पर कोई शर्मिंदगी नहीं है, लेकिन कुछ लोग विक्की को देखकर उसका मजाक उड़ाते हैं। विक्की कहता है कि घर की जिम्मेदारी आने के कारण मैं अपनी कमजोरी को छुपाकर काम करना ज्यादा पसंद करता हूं। मैंने रोज सब्जी का ठेला लगाना चालू कर दिया है और दिन का 500 रूपए तक कमा लेता हूँ। विक्की के घर वालों को सब्जी खरीदने की भी जरूरत नहीं पड़ती और पैसों से विक्की घर वालों की मदद भी करता है। विक्की ने बताया कि भैया रेडी पर खडे होकर सब्जी बेचना मुझे अच्छा लगता है क्योंकि मैं अब काम करने लगा हूं और पैसों से मैं अपने घर वालों को भी सपोर्ट कर रहा हूं। मैं अब बहुत पैसा कमाना चाहता हूं और बड़ा आदमी बनना चाहता हूँ।

बूंद बूंद पानी की लिए तरसते बच्चे

बालकनामा रिपोर्टर - काजल

जीवनयापन करने के लिए सबसे जरूरी है पानी। यदि वह भी दूर से लाना पड़े तो दैनिक जीवन के सारे कार्य प्रभावित हो जाते हैं। बालकनामा रिपोर्टर काजल ने जयपुर की विभिन्न बस्तियों का दौरा किया और बच्चों से उनकी समस्या जानने का प्रयास किया। बच्चों ने बस्ती में पानी की समस्या के बारे में बताया कि बच्चों का कहना है कि बस्ती में जो हैण्डपम्प लगा है उसमें पानी नही आता। यहां पानी की बहुत समस्या है हमको बहुत दूर से पानी भरकर लाना पड़ता है। जल विभाग वाले पानी का टैंकर लाते हैं उस पर निशुल्क लिखा होता है फिर भी पानी का पैसा मांगते हैं। हम रोज-रोज पैसे से पानी नहीं खरीद सकते इसलिए हमें पानी बस्ती के बाहर से भरकर लाना पड़ता है। तभी घर में खाना,साफ-सफाई और नहाने-धोने के कार्य सम्भव हो पाते हैं। पानी भरकर लाते-लाते हम बहुत थक जाते हैं। कभी-कभी तो पानी लाने में बहुत देर होने के कारण विद्यालय भी नहीं जा पाते हैं और दिनभर के कार्य पानी के बिना संभव भी नहीं है। बस्ती के पार्षद को भी बार-बार सूचना दी गई लेकिन कोई हमारी आवाज नहीं सुनता है।

जयपुर की चूड़ियों के पीछे छिपी दर्दनाक बाल श्रम कहानी

बालकनामा रिपोर्टर - शबीर शा , बातूनी

जयपुर चूड़ियों के लिए बहुत मशहूर है लेकिन इन चूड़ियों को बनाने में न जाने कितने ही बच्चे बाल श्रम का शिकार हो रहे हैं, शायद ही कोई इस बात पर गौर करता होगा। चूड़ियों के बाल श्रम से जुड़ी कितनी कहानियाँ, व्यथाएँ और मजबूरियां छिपी हैं। जयपुर की एक कच्ची बस्ती में 13 वर्षीय नेहा अपने घर पर चूड़ी बनाने का काम करती है। नेहा ने बताया कि उसका परिवार उत्तर प्रदेश से जयपुर काम की तलाश में आया था। उसके पिता ने बेलदारी का काम करना शुरू किया, लेकिन पिता जी को कभी काम मिलता और कभी नहीं मिलता। फिर एक दिन पता चला कि बस्ती में चूड़ियों पर नग लगाने का काम किया जाता है। माँ के साथ नेहा और तीन छोटे-भाई बहन चूड़ी बनाने के काम में फंस गए और छोटे ,अँधेरे और बिना हवा के बदबूदार कमरे में नेहा की फुतीर्ली अंगूलियाँ चूड़ियों पर आश्चर्यजनक निपुणता से नग चिपकाती रहती है। यह चूड़ियां एक विशेष घर जहाँ यह काम ज्यादा होता है वहाँ से आती है और नग लगने के बाद पुनः लौट जाती है। इस काम के नेहा व उसके छोटे भाई-बहन को 30-40 रूपए दिन की कमाई हो जाती है। इसके अलावा नेहा का स्कूल जाने का सपना अधूरा ही रह गया क्योंकि वह दूसरे राज्य से आई है इसलिए उसके पास दस्तावेज नही है। नेहा के जैसे बस्ती में ऐसे बहुत बच्चे हैं जो परिवार की आर्थिक स्थिति सही न होने के कारण चूड़ियों पर नग लगाने का कार्य कर रहे हैं।

पलायन के कारण बच्चे हो रहे शिक्षा से वंचित

बालकनामा रिपोर्टर शबीर शा
बातूनी रिपोर्टर अजय

बालकनामा रिपोर्टर शबीर ने जयपुर की विभिन्न बस्तियों का दौरा किया। इसी बीच जयपुर की एक बस्ती में सड़क के किनारे बसे लगभग 20 झुग्गियों में रहने वाले बच्चों से बात की और उनकी समस्या एवं अनुभव जानने का प्रयास किया। बच्चों से बातचीत के दौरान पत्रकार ने उनसे पूछा कि आप यहां कब से रह रहे हो और आपको क्या समस्या आती हैं ? तब 10 वर्षीय विजय ने बताया कि हम लगभग 6 महीने से यहां पर रह रहे हैं और चित्तौड़गढ़ से आए हैं। हमारे माता-पिता चित्तौड़गढ़

की कपासन मंडी से खजूर की पत्तियां लेकर प्रत्येक 6 महीने में अलग-अलग जगह पर जाकर झाड़ू बनाकर बेचने का कार्य करते हैं। सबसे बड़ी समस्या यह है कि सड़क के किनारे रहने के कारण कुछ लोग बहुत परेशान करते हैं क्योंकि कि झाड़ू बनाने में बहुत कचरा फैलता है और वह कहते हैं कि अपनी झुग्गियों को यहां से हटाओ और कहीं और जाकर रहो। जब बालकनामा रिपोर्टर ने पूछा कि आप स्कूल नही जाते हो क्या? तब विजय ने बहुत ही उदासीनता के साथ बताया कि स्कूल जाने का बहुत मन करता है, लेकिन रोजगार के लिए प्रत्येक 6 महीने में एक शहर से दूसरे शहर पलायन करते रहते हैं। ऐसे में किसी भी स्कूल में दाखिला नही मिलता। अब तो परिवार के साथ रहकर उनकी मदद करना और भाई - बहनों की देखभाल करना बस यही जीवन रह गया है हमारा।

न जाने कितने बेकसूर बच्चों और उनके घरवालों को भुगतना पड़ा नूह में हुए दंगों का हर्जाना

बालकनामा रिपोर्टर असलम

हरियाणा का पत्रकार असलम ने जब घसोला की योगियों का दौरा किया तो तब हमारे बालकनामा के पत्रकारों को पता चला कि एक बच्चा जिसका परिवर्तित नाम उस्मान है वह गजल गांव में 10 साल से रह रहा है। उसने बताया कि भैया मेरे पिताजी ऑटो चलाने का काम करते हैं और हरियाणा में हिंदू मुस्लिम की लड़ाई चलने के कारण हमारे पिताजी ऑटो चलाते हैं और उन्हें रेड लाइट क्रॉस नहीं करने दिया जाता। जिस कारण हमारे पिताजी उस समय काम नहीं कर पाए और काम न होने के कारण कमाई भी नहीं हो पायी। उस समय एक दिन हमारे पिताजी रेड लाइट क्रॉस करने की कोशिश कर रहे थे तो बजरंग दल के लोगों ने हमारे पिताजी के ऑटो को का शीशा तोड़ दिया। वो किसी न किसी तरह से बचकर घर पर आ पाए।

हमारे पिताजी बोल रहे थे कि वह लोग तो मुझे मारने ही वाले थे लेकिन किसी न किसी तरह से मैं वहां से बचकर आ गया। इसी कारण मेरे पिताजी अभी ऑटो भी नहीं चलाते हैं। इस घटना से उनको बहुत बड़ा सदमा लग गया है। उस्मान ने बताया कि भैया हम पक्के मकान में रहते थे, लेकिन दंगों की समय पर कुछ लोगों ने हमें वहां से मार कर भगा दिया और हमें झुग्गियों में

आना पड़ा। यहां आने के बाद भी हमें धमकियां मिलने लगी और इस कारण हमें वहां से भागकर मजबूरी में गांव जाना पड़ा। उसने बताया कि हमारी खाला जी भी अच्छे मकान में रहती थी, लेकिन उनके मकान मालिक ने उन्हें डरा धमकाकर वहां से भगा दिया और उनको जबरदस्ती झोपड़पट्टी में आकर रहना पड़ा। उनके झोपड़पट्टी के ठेकेदार अच्छे होने के कारण उन्हें सलाह दी कि आप घर के अंदर ही रहे और खराब समय में उनकी मदद भी की। लेकिन हम जिस बस्ती में थे वहां के कुछ लोग ऐसे थे जो हमारी मदद करना तो दूर हमें गाली देते थे। हमारी गलती ना होने के कारण भी हमारे साथ इतना गलत व्यवहार हुआ है। अब बताएं भैया हम करें तो करें क्योंकि हमारी समस्या का समाधान करने वाला कोई नहीं है और न ही किसी ने हमसे पुछा कि हम किन परिस्थितियों से गुजर रहे हैं।

माता-पिता ने छोड़ा उमेश का साथ, सड़कों पर रेड़ी लगाने को हुआ मजबूर

बातूनी रिपोर्टर उमेश
बालकनामा रिपोर्टर असलम

जैसा कि आपको पता ही होगा कि सड़क एवं कामकाजी बच्चे कितने मेहनती होते हैं। यह बच्चे नन्ही सी उम्र में बाल मजदूरी का शिकार हो जाते हैं। इस विषय में हमारे बालकनामा पत्रकार असलम ने कुछ बच्चों से बातचीत की तो एक बच्चे उमेश ने बताया कि भैया हमारे यहां एक बच्चा है जो अपने चाचा के साथ सब्जी बेचता है। उसके पिताजी बचपन में ही गुजर गए थे और उसकी माताजी घर से भाग गई और यह बच्चा अनाथ हो गया। जिसके कारण अब उसे अपने चाचा के साथ सब्जी की रेड़ी पर काम करना पड़ता है। पत्रकार को बच्चे ने बताया कि भैया मेरी उम्र अभी 8 साल है और घर में कोई न होने के कारण मुझे काम करना पड़ता है। इसलिए मैं अपने चाचा के साथ सब्जी

बेचता हूँ और जो चाचा कमाते हैं वह हमें खिलाने में लगा देते हैं। हमारी माता कोठियों में खाना बनाने का काम करती थी और ज्यादा काम करने के कारण वह बहुत थक जाती थी। अगर मेरी माताजी काम नहीं करती तो घर का खर्चा नहीं चल पाता, इसलिए हमारी माताजी हमें ही छोड़कर भाग गई। इसीलिए हमें हमारे चाचा के साथ रहकर काम करना पड़ता है। अगर हम काम नहीं करेंगे तो हमें भूखा रहना पड़ेगा और हम चाहते हैं कि काश कोई हमारी मदद कर दे तो हम भी पढ़ पाए। मेरे चाचा का काम भी अभी मंदा चल रहा है, नहीं तो हमारे चाचा हमें जरूर पढ़ाते। उमेश ने बताया कि भैया पहले मैं पढ़ता था, जब से मेरी माता जी घर छोड़ कर गई है तब से मैं सब्जी का काम करता हूं और मैं इसी से अपना पेट भरता हूं। मुझे पढ़ने का बहुत शौक है और मैं पढ़ लिखकर एक आर्मी ऑफिसर बनना चाहता हूँ। लेकिन मेरा यह सपना पूरा नहीं हो पाया इसका मुझे बहुत दुख है।

परीक्षा को लेकर उत्साह और भय का मिश्रण, मेहनत पर है विश्वास

बातूनी रिपोर्टर अंशु

पत्रकार सरस्वती जब रेशमा कैंप का दौरा कर रही थी तो बातूनी रिपोर्टर अंशु से बातचीत के दौरान पता चला की सितंबर माह में अर्धसत्रीय परीक्षा आने वाली हैं! परीक्षा नजदीक हैं और तैयारी करने के लिए समय कम है! अंशु ने पत्रकार को बताया की उसकी तरह कई सड़क एवं कामकाजी बच्चे पहली बार परीक्षा में बैठेंगे और परीक्षा लिखेंगे! परीक्षा को लेकर बच्चों में भय एवं उत्साह दोनों तरह की भावनाएं देखने को मिल रही हैं! पत्रकार सरस्वती ने जब उत्साह एवं भय का कारण पूछा तो अंशु ने जानकारी देते हुए कहा की हम बच्चे पहली बार स्कूल गए हैं, और नॉन प्लान दाखिला से देर से स्कूल में प्रवेश मिला है! हमारा न तो काम पूरा है और न ही हम अन्य बच्चों की तरह जल्दी ब्लैक बोर्ड से स्कूल में लिखवाए जाने वाले काम उतार पाते हैं! यहाँ देखकर लिखने में दिक्कत का

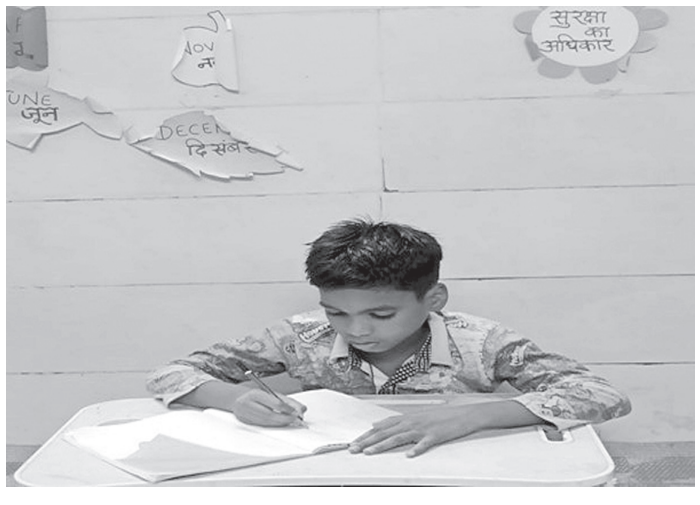

सामना करना पड़ता है फि र परीक्षा तो बड़े टेस्ट की तरह होती है और बहुत मेहनत करनी पड़ती है! मुझे इसलिए डर लग रहा है और खुशी और उत्साह इस बात से है की हम पहली बार परीक्षा देंगे जिसके लिए मेहनत हम सब कर रहे हैं! सरस्वती ने जब परीक्षा की तैयारी को लेकर सवाल पूछे तो अंशु ने जानकारी देते हुए कहा कि हम बच्चे रोजाना दो पेज सुलेख लिखते हैं ताकि हमारी लिखने की स्पीड बढ़ जाए और लेख सुंदर हो जाए! मैं रोज सुबह जल्दी उठकर पढ़ता हूँ और शाम को भी अभ्यास करता हूँ!

16 साल की उम्र में ही बच्चों की पढ़ाई रोककर काम पर लगा देते हैं माता-पिता

बातूनी रिपोर्टर ऋतिक
बालकनामा रिपोर्टर असलम

पत्रकार असलम ने हरियाणा के बादशाहपुर की झुग्गियों का दौरा किया तो पत्रकार को पता चला कि जो बच्चे 16 साल की उम्र के हो जाते हैं तो उनके घरवाले उन्हें पढ़ने लिखने से मना करते हैं। उनका मानना है कि ज्यादा उम्र हो जाने के कारण उनका ज्यादा खर्चा पढ़ाई में लग जाता है, जिससे घरवाले परेशान होकर उन्हें काम करने के लिए कहते हैं। 16 साल की उम्र में कोई भी दुकानदार बच्चों को छोटे-मोटे काम दे देता है, जिस कारण बच्चों के माता-पिता उन्हें कम पर लगाने के लिए कहते हैं। माता-पिता चाहते हैं कि बच्चे की 16 साल की उम्र हो चुकी है और 18 साल के होते ही इनकी शादी करवा देंगे। हमें परिवर्तित नाम रितिक ने बताया कि मैं अभी 16 साल का हो चुका हूं और मेरे घर वाले मुझे पढ़ने से मना कर रहे हैं, क्योंकि वह चाहते हैं कि मैं अब काम करूँ। उनके अनुसार मैंने स्कूल जाकर अभी तक कुछ नहीं किया, बस अपना नाम लिखना ही सीख पाया हूँ और अब मुझे और पढ़ना नहीं है। वो अब मुझे काम पर लगवा देंगे, जिससे मैं कमा कर उनको पैसे लाकर दूंगा। बच्चे कहते हैं कि मुझे और पढ़ना है लेकिन उनके माता-पिता कहते हैं कि अगर तुम्हे पढ़ना है तो खुद कमाओ और खुद अपनी पढ़ाई में पैसे लगाओ। बच्चे कहते हैं कि अगर मैं काम करूंगा तो फिर मैं अपनी पढ़ाई अच्छे नहीं कर पाऊंगा। इसलिए कुछ कुछ बच्चों ने तो अपने घर वालों की ऐसी बातें सुनकर पढ़ाई से साफ मना कर दिया और काम पर लग गए। आज अगर वह बच्चे पढ़ जाते तो उनको अच्छी नौकरी मिलती है और वो आगे बढ़ जाते। लेकिन कुछ ऐसे माता-पिता है जो बच्चों को 10वीं और 11वीं तक पढ़कर उन्हें कम पर लगवा देते हैं, ताकि वह सिर्फ अपना नाम लिखना सीख जाए और कोई बच्चा अच्छा पढ़ना लिखना सीख जाता है तो फिर भी उनके माता-पिता उन्हें कम पर लगवाने की धमकी देते हैं। कहते हैं कि पढ़ लिख कर तू कोई आईपीएस नहीं बन जाएगा। तुझे करना यही दस से पंद्रह हजार रूपए की नौकरी ही करनी है। फिर हमने बच्चों से पूछा अगर आपको एक मौका मिले तो आप क्या करना चाहोगे तो बच्चों ने बताएगी भैया मुझे तो बैंक में सरकारी नौकरी करनी है।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

बच्चे हो रहे हैं नशे की गिरफ्त का शिकार

बातूनी रिपोर्टर एह्त्रामील और मंतशा

पश्चिमी दिल्ली के बाल्मिकी कैंप नामक इलाके में जब बालकनामा रिपोर्टर ने बच्चों से मिलाकात किया और उनकी परिस्थिति जानने की कोशिश किया तो बच्चों ने रिपोर्टर को बताया कि इस इलाके में अब कई बड़े बच्चे जिनकी उम्र 16 -17 साल की है वे धीरे धीरे नशे की चपेट में आ रहे हैं। बच्चों ने कार्यकर्ता को बताया कि बड़े बच्चों में नशे के प्रति इस प्रकार रुझान देख अब बच्चों को स्वतंत्रता से कहीं आने जाने में डर लगता है और बिगड़ते माहौल के चलते उनके माता पिता भी अब उन्हे बाहर जाने से और खेलने से मना करते हैं । इस समस्या का सामना सबसे ज्यादा लड़कियों को करना पड़ रहा है क्योंकि अब उन्हें ज्यादा असुरक्षित महसूस होता है और उनके माता पिता उन्हें घर से बाहर निकलने के लिए मना करते हैं । बच्चों ने यह भी बताया कि शाम के समय यह इलाका बिलकुल बदला बदला सा लगता है नशा जैसे की चरस गांजा लोग खुले में बिना किसी डर के खरीदते हैं यहां तक की शराब भी लोग खुले में पीते हुए दिखाई पड़ते हैं जिससे की बच्चे अक्सर डर जाते हैं । बच्चों ने यह भी बताया की कई बार वह बच्चों से बात करने की भी कोशिश करते हैं जिस वजह से अब बच्चे अक्सर अकेले निकलने में कतराते हैं। बच्चों का यह कहना है की मैडम इन लोगों का नशा करने का कोई समय नहीं होता इसलिए स्कूल से आते जाते हुए या यदि हमें पानी भरने जाना है या बाजार से कोई समान लेने जाना है हमे बहुत सतर्कता से जाना पड़ता है। जिन बच्चों के माता पिता सारे दिन भर बाहर काम पर रहते हैं और उन्हें छोटे भाई बहनों का ख्याल रखना पड़ता है वह तो और भी ज्यादा सतर्क रहने की कोशिश करते हैं यह बच्चे इस हद तक लाचार हैं की पेट के लिए रोटी कमाने के लिए उनके माता पिता का काम करना जरूरी है।जानकारी एकत्रित करते हुए एक बच्चे ने बताया की अभी जन्माष्टमी के दिन ही एक आदमी ट्रेन के नीचे आ और गया और ऐसा कहा जा रहा था की वह नशे में था जिस कारण वह पटरी में ही सो गया और अगले दिन जब सुबह आस पास के लोगों ने देखा तो शरीर के टुकड़े पटरी में पड़े हुए थे। बच्चे इसी आशा में है की कब उनके इलाके की इस प्रकार की परेशानियां हमेशा के लिए समाप्त होंगी।

पिता की गलती की सजा मेरी मां को भुगतनी पड़ी

ब्यूरो रिपोर्ट

बालकनामा के पत्रकारों ने पश्चिम दिल्ली के शिवाजी पार्क में स्थित झुग्गी बस्तियों के बच्चों से मिलकर उनकी समस्याओं पर चर्चा की। अपनी विजिट के दौरान पत्रकारों को एक लड़की परिवर्तित नाम खुशी मिली, जो बहुत उदास नजर आ रही थी। उसको उदास देखकर पत्रकारों ने खुशी से बात करने की कोशिश की तो वह बात करने से हिचकिचा रही थी और बहुत डरी हुई थी। पत्रकारों ने उसे हौसला देते हुए उसकी परेशानी को जानने का प्रयास किया तो खुशी ने बताया कि हम सभी परिवार के लोग इस झुग्गी में रहते हैं। हम लोग रोजाना कबाड़ा बिनकर और उसे बेचकर मिले पैसों से अपना घर का खर्चा चलाते हैं। सभी बच्चे छोटी-छोटी खुशियां मनाते हैं और मैं भी खुश रहना चाहती हूँ। लेकिन मेरे घर के हालातों के कारण मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लगता है। अभी 15 अगस्त को जब सभी लोग देश आजाद होने की खुशियां मना रहे थे तो उस दिन मेरे पिता शराब पीकर घूम रहे थे। पिताजी उस दिन घर में रखे कुछ पैसे चुपचाप निकाल कर ले गए और झुग्गी के लोगों के साथ जाकर जुआं खेलने लग गए। कुछ समय तक सब कुछ ठीक था, लेकिन कुछ देर बाद पिताजी जुएं में लगभग 3000 से ऊपर रूपए हार गए थे। इतने पैसे हारने के बाद पिताजी उन लोगों से लड़ने लगे और कहने लगे कि तूने बेईमानी की है, तू यह सारे पैसे बेईमानी से जीता है और पिताजी के साथ उन लोगों के बीच बात बहुत बढ़ गई। वो लोग आपस में लड़ने लगे। वहां पर कुछ लोगों ने यह लड़ाई छुड़वाई, फिर पिताजी घर पर आ गए। जिस व्यक्ति से पिताजी जुएं में हारे थे, वह व्यक्ति कुछ

समय बाद अपने परिवार एवं महिलाओं को लेकर हमारी झुग्गी में आ गया और उस व्यक्ति ने हमारे माता-पिता एवं बड़े भैया, ठेकेदार और उनके परिवारों को डंडे से बहुत मारा। लगभग 25 से 30 लोग हमारे परिवार को मारने आए थे और हम सिर्फ 10 से 15 ही लोग थे। हम उनका कुछ नहीं कर पाए और हमें कारण भी नहीं पता चल पाया कि उन लोगों ने हमें आकर क्यों मारा। जब वह हमें पीटकर चले गए, तब जाकर कारण पता चला। इतना ही नहीं मेरी माता जी गर्भवती हैं और उन्होंने हमारी माताजी के पेट में भी मारा जिसके कारण उनका मिसकैरेज हो गया। हम लोग माताजी को तुरंत अस्पताल लेकर गए तो पता चला कि बच्चे की मृत्यु हो गई है। जिन लोगों ने हमारे परिवार के साथ मार पिटाई की थी उन्होंने ठेकेदार से कहा कि इस बात को आपस में सुलझा लेते हैं, पुलिस केस करने से कोई फायदा नहीं। लेकिन इतना कुछ होने के बाद हम कैसे मान जाते। इस कारण हमारे ठेकेदार ने पुलिस रिपोर्ट दर्ज करवाई और पुलिस के अधिकारी उन लोगों को पकड़ कर ले गए।

छोटी बहन को शौचालय ले जाने के दौरान हुआ हादसा, ट्रक ने मारी अयान को टक्कर

बातूनी रिपोर्टर आदिल व रिपोर्टर हंसराज

पश्चिम दिल्ली की झुग्गी बस्ती में रह रहा परिवर्तित नाम अयान ट्रक से टकराकर घायल हो गया। अयान की छोटी बहन ने इस हादसे के बारे में बताते हुए कहा कि हम लोग किराए की झुग्गी में रहते हैं।

यहां पर शौचालय नहीं है इसलिए झुग्गी बस्ती में रह रही सभी महिलाएं और बालिकाओं को शौच के लिए झुग्गी से बहुत दूर बने शौचालय में जाना पड़ता हैं। दिन में तो हम अकेले चले जाते हैं लेकिन रात में हम लोगों को वहां पर अपने परिवार के किसी सदस्य के साथ जाना पड़ता है।

कुछ दिन पहले रात के 8 बजे मैं भी अपने भाई के साथ शौचालय शौच करने के लिए गई थी और मेरा भाई सड़क के किनारे बने हुए शौचालय के बाहर खड़ा हुआ। उस सड़क वहां बहुत चलते हैं और बड़े-बड़े ट्रक भी आते जाते रहते हैं। रात के समय में ज्यादातर ट्रक वाले नशा करके ट्रक चलाते हैं। अयान जब शौचालय के बाहर अपनी बहन का इंतजार कर रहा था तो देखा कि सामने से एक ट्रक वाला काफी तेजी से टेढ़ा-मेढ़ा ट्रक चलाते हुए उसकी ओर आ रहा था। अयान सड़क से दूर एक कोने में खड़ा हुआ था, लेकिन ट्रक वाले ने काफी तेजी से आते हुए अयान के पैरों पर ट्रक का अगला पहिया चढ़ा दिया।

इतनी देर में मैं शौचालय से बाहर आई और अयान को इस हालत में देखकर मैं रोने लगी। मुझे रोटा देखकर वह ट्रकवाला उतरकर हमारे पास आया और मुझे कहने लगा कि किसी को मेरा गाड़ी नंबर, मेरा बारे में मत बताना। इतनी देर में इस हादसे को देखकर कुछ लोग भागकर हमारे पास आए। इतनी देर में गाड़ीवाला यहां से भाग निकला और आगे जाकर उसने एक और हादसा कर दिया।

कुछ लोग जो हमारे पास आये थे, उन्होंने उस ट्रक ड्राइवर का पीछा किया तो देखा कि उस ट्रक ड्राइवर को आगे पुलिस वालों ने पकड़ लिया था। हम लोगों ने भी पुलिस वालों से उसकी शिकायत की और पुलिस वाले ने उसे ट्रक ड्राइवर को बहुत मारा। कुछ दिन बाद पता चला कि ट्रक ड्राइवर पुलिस वाले को रिश्वत देकर वहां से छूट गया।

माता-पिता अपने बच्चों के बने दोस्त और न करें उनके साथ दुर्व्यवहार

ब्यूरो रिपोर्ट

अधिकतर सड़क एवं कामकाजी बच्चों को घरेलु हिंसा जैसी परेशानियों से जूझना पड़ता है। कामकाजी बच्चों के पिता रोज शराब पीकर आते हैं और नशे में उनकी माताजी को और बच्चों को पीटते हैं। इन लोगों कि बिना किसी गलती के पीटा जाता हैं तो इनको बहुत गुस्सा आता है, लेकिन वह कुछ नहीं कह पाते। पश्चिम दिल्ली में रह रहा 10 वर्षीय परिवर्तित नाम राजू को चुंबक से खेलना बहुत पसंद है। वह रोज अपनी दो चुंबक से खेलता रहता था। एक दिन खेलते खेलते उसने उस चुंबक को अपने मुंह में डाल लिया और वह कुछ देर तक मुंह में चुंबक को डालकर रखा, जिसके कारण वह चुम्बक उसके पेट में चली गई। राजू ने 2 महीने तक यह बात ना ही अपनी माता जी को और ना पिताजी को बताई। उसको इस बात का डर था कि यदि यह बात वह उनको बता देगा तो उसके पिताजी उसको बहुत मारेंगे। इस कारण डर के कारण उसने यह बात उसने छिपाई। एक दिन राजू के पेट में बहुत दर्द उठा तो राजू ने अपने माता - पिता को यह बात बताई। तब उसके पिताजी ने राजू को हॉस्पिटल ले जाकर डॉक्टर को दिखाया। डॉक्टर ने राजू का इलाज शुरू कर दिया और उनके पिताजी को बोलै कि इलाज में दो लाख रुपए लग जाएंगे। राजू के पिताजी के पास इतने पैसे नहीं थे, कि वह राजू का इलाज करा पाएं तो उसके पिताजी ने अपने रिश्तेदारों से पैसे उधार मांगे तब जाकर राजू का इलाज करवाया। अब वर्तमान में राजू बिल्कुल स्वस्थ है और वह रोजाना स्कूल भी जाने लगा है और स्कूल से आने के बाद वह चेतना संस्था के एजुकेशन क्लब में भी पढ़ने के लिए आता है। इसलिए बहुत जरुरी है कि माता पिता को अपने बच्चों का दोस्त बनना चाहिए, उनके साथ मारपीट नहीं करनी चाहिए, ताकि वो खुलकर अपने मन की बात उनसे कह सकें।

हरियाणा में हुए दंगों की दहशत से घबराए बच्चे

अपनी आँखों के सामने हुई मारपीट के दर से स्कूल जाना किया बंद

ब्यूरो रिपोर्ट

हाल ही में हरियाणा राज्य में हिंदू और मुस्लिम के बीच हुए तकरार और दंगों का असर खासतौर पर बच्चों पर ज्यादा दिखाई पड़ा है। इन दंगों, तोड़फोड़ और पथराव के चलते न जाने कितने लोगों का कारोबार तहस नहस हो गया और लोगों को अपना सामान, घरबार सब छोड़कर अपने-अपने गांव जाना पड़ा। दंगों के दौरान बच्चों के सामने हुई लड़ाई, एक दूसरे के साथ मारपीट, दुकानें जलाना और आगजनी करने का सबसे ज्यादा असर इनके दिलों दिमाग पर हुआ है।

बच्चों ने जब इन सभी चीजों को अपने सामने होते हुए देखा तो बच्चे बहुत ज्यादा डर गए और जो बच्चे मुस्लिम समुदाय के थे, उन पर इसका असर बहुत ज्यादा हुआ है। इनमें से जो बच्चे स्कूल जा रहे थे, उन्हें इस दंगे के कारण अपना स्कूल छोड़ना पड़ा। जब दंगा खतम हुआ और माहौल शांत होने लगा तो बच्चे स्कूल जाने से घबरा रहे हैं। वो स्कूल जाने के बजाय घरों में रहना ज्यादा पसंद कर रहे हैं। क्योंकि बच्चों ने अपनी आँखों से जो लड़ाई और मारपीट देखी है, उसको वो भूल नहीं पा रहे हैं। उनसे बात करके पत्रकार को ऐसा लगा कि जब तक बच्चों का घाव भर नहीं जाते, तब तक उनके लिए स्कूल जाना संभव नहीं है। इन दंगों के चलते कुछ बच्चे तो हमेशा किये ही अपनी पढ़ाई को छोड़कर गांव चले गए हैं और वापस आने से कतरा रहे हैं। उनका कहना है कि वो गांव में ही पढ़ाई कर लेंगे लेकिन शहर वापस नहीं आएंगे।

50 लोगों के झुंड ने जलाई आरिफ की कबाड़ी की दुकान

दुकान जलने से उसके परिवार वालों को झेलना पड़ा लाखों का नुकसान

बातूनी रिपोर्टर आरिफ
बालकनामा रिपोर्टर असलम

हरियाणा के पत्रकार असलम ने जब घासोला की झुग्गियों का दौरा किया तो पत्रकार को पता चला कि एक बच्चा जिसका नाम आरिफ है, अपनी तीन बहनों के साथ ऋटऊ में रहता है। वह अपने पिताजी के साथ कबाड़ी की दुकान चलाता है और पढ़ाई भी करता है। वह सुबह 8 बजे से 2 बजे तक स्कूल में रहता है और उसके बाद अपनी कबाड़ी की दुकान चलाता है। लेकिन हरियाणा में हाल ही में हुए दंगों के चलते बादशाहपुर के पास जितनी भी मुस्लिम समुदाय के लोगों की दुकानें थी , वो सभी तोड़ दी गई और कुछ लोगों की पूरी पूरी दुकानें भी जला दी गयी। जब आरिफ और उसके पिताजी अपनी दुकान जा रहे थे तो 50 लोगों के झुंड ने उनकी दुकान पर हमला किया और दुकान में तोड़फोड़ करने लगे और उन लोगों में से एक ने उनकी दुकान पर पेट्रोल डालकर आग लगा दी। कुछ लोगों ने उसके पिताजी को घेर लिया और उसके पिताजी को मरने लगे। ऐसी दशा में आरिफ और उसके पिताजी कैसे कैसे अपनी जान बचाकर अपने घर वापस आए। कमाई का साधन खतम हो जाने से आरिफ के पिताजी बहुत परेशान थे, क्योंकि उनकी तीन बेटियां हैं, जिनकी शादी की उम्र है। इसी कारण आरिफ को अपने परिवार के साथ अपने गांव बरेली जाना पड़ा। आरिफ इतनी आसानी से वहां से नहीं निकल पाया था, जब वह अपने गांव के लिए घर से निकला तो कुछ लोगों ने उसका पीछा किया और उसको मरने की कोशिश की। लेकिन इतनी मुश्किलों के बावजूद वह किसी तरह से बादशाहपुर क्रॉस कर पाया। अब आरिफ अपने गांव बरेली, शांतिपुर में है। इस दंगे में आरिफ और उसके पिताजी को बहुत ज्यादा नुकसान उठाना पड़ा। आरिफ की कबाड़ी की दुकान में 1 लाख से भी ज्यादा का सामान था और 50000 से भी ज्यादा का कैश था। लोगों ने उनकी दुकान का सारा सामान जला दिया और सारे पैसा लेकर चले गए और आरिफ के परिवार वाले कुछ नहीं कर पाए। इस घटना के बाद आरिफ ने अपनी पढ़ाई छोड़ दी और काम पर लग गया। जब हमने उससे बात की तो आरिफ ने बताया कि मेरी तीन बहने हैं और उनकी शादी के लिए हमें पैसा इकट्ठा करना है। इसलिए अब मुझे अपना कोई काम शुरू करना पड़ेगए और मैं अब पढ़ाई नहीं कर पाऊंगा।

नशे में धुत भाई ने चाकू मारकर ली अपने ही छोटे भाई की जान

ब्यूरो रिपोर्ट

हमें अपने आसपास सड़क एवं कामकाजी बच्चों को कुछ ना कुछ काम करते नजर जरूर आ जाते हैं। इनमें से कोई खाने का समान, कोई पढ़ाई लिखाई या कपड़े आदि बेचने का काम करते हैं। सडकों पर सामान बेचते हुए कभी-कभी कई ग्राहक ऐसे आ जाते हैं जो बच्चों से बदतमीजी करने लगते हैं और उनको धमकाने और मारने लगते हैं। जब पत्रकारों ने ऐसी खबरों पर बच्चों से बात की तो दिल्ली शहीद कैंप की झुग्गी में रहने वाले बच्चों ने बताया कि हमारी बस्ती में अनुज नामक एक लड़का रहता था। उसके घर में चार सदस्य हैं। अनुज अपने घर के पास की मार्केट में अंडे बेचने का काम करता था। वह दोपहर के 3 बजे जाता और रात के 9 बजे घर पर वापस आता। वह 6 घंटे में अंडे बेचकर जो कामता तह उसी पैसों से घर का खर्चा और अपना खर्चा चलाता था। विस्तार से बात करने के दौरान उसने यह भी बताया कि जिस जगह पर वह अपने अंडे की दुकान लगाया करता था, वहां पर बहुत से लोग अनुज को छोटा देखकर बिना गलती के धमका भी जाते थे और कुछ लोग उसे पीटकर भी चले जाते थे। ऐसे ही दिन बीतते चले गए और एक दिन अनुज ने अंडे की रेड़ी लगा रखी थी और कुछ देर के लिए अनुज का बड़ा भाई भी दुकान संभालने के लिए आया था। उस दिन एक ग्राहक आया और उसने अनुज से चार अंडे मांगे और अनुज ने चार अंडे एक थैली में पैक करके दे दिए। उस व्यक्ति ने शराब पी रखी थी और उसने अनुज से एक और पॉलिथीन मांगी पर अनुज के पास एक लास्ट पॉलीथिन बची थी जो उसी व्यक्ति को अनुज दे चुका था तो अनुज ने उसे पॉलिथीन देने से मना कर दिया। उसने कहा कि मेरे पास एक लास्ट पॉलीथिन बची थी जो मैंने आपको दे दी अब मेरे पास पॉलिथीन नहीं है। इतना सुनते ही वह व्यक्ति अनुज से बदतमीजी करने लगा और गाली गलौज करने लगा और बात इतनी अधिक बढ़ गई कि उस व्यक्ति ने अनुज को बहुत मारा और अनुज का भाई उसे कुछ नहीं बोला। इसके बाद अनुज दुकान बंद करके अपने घर चला गया। अनुज के भाई ने भी उस दिन अधिक शराब पी रखी थी और घर पहुंचकर अनुज का भाई अनुज से पॉलिथीन की बात को लेकर बात करने लगा और बातों बातों में लड़ाई इतने बढ़ गई कि वह दोनो हाथापाई पर उतर आए। अनुज के भाई ने गुस्से में आकर पास में रखी चाकू उठाकर अनुज को चाकू मार दिया। चाकू लगने से अनुज की मृत्यु हो गई। अनुज की माताजी बाहर गई हुई थी और जब वह घर पर आई तो ऐसी हालात देखकर वह अचंभित हो गई और जोर जोर से रोने लगी। उनको रोटा हुआ देखकर आस पास के लोग आ गए और उन्होंने एंबुलेंस को कॉल लगाया, लेकिन एंबुलेंस समय पर ना आने और अनुज का समय से इलाज न होने के कारण उसकी स्थिति बिगड़ गई और उसकी मृत्यु हो गयी। जब यह बात पुलिस को पता चली तो उन्होंने अनुज के भाई को गिरफ्तार कर लिया।

रिपोर्टरों ने बच्चों को दी चाइल्ड हेल्पलाइन नंबर 1098 की जानकारी

रिपोर्टर हंसराज

पश्चिम दिल्ली की शकूर बस्ती में रह रही बातूनी रिपोर्टर ने बताते हुए कहा कि जिस झुग्गी बस्ती में मैं रहती हूं वहां पर ज्यादातर बच्चे एवं बड़े लोग रहते हैं। अधिकतर बच्चे स्कूल भी जाते हैं। लेकिन जो बच्चे स्कूल नहीं जाते, वह इधर उधर घूमते और शैतानी करते रहते हैं। हमेशा किसी न किसी से लड़ाई करने की तलाश में रहते हैं। जो बच्चे स्कूल जाते हैं, वह स्कूल से आने के बाद इन सभी बच्चों के साथ मिल जाते हैं और फिर वह भी शरारत करने लगते हैं। यह बच्चे अपने से छोटे बच्चों को परेशान करते हैं। इतना ही नहीं यह किसी की भी गाड़ी में शीशे पर पत्थर मारकर भाग जाते और इनकी गलती की सजा दूसरे बच्चों को झेलनी पड़ती है। स्कूल से आने के बाद सारे बच्चे झुग्गी में पैसों के सिक्के से जुआ खेलते हैं और जीते हुए पैसे अपने पास रख लेते हैं। उन पैसों का ये गलत इस्तेमाल करते हैं। यह बात उनके माता-पिता को पता नहीं चलती कि उनके बच्चे जुआ खेलते हैं। यह बच्चे आपस में एक दूसरे को इतनी गंदी-गंदी गाली देते हैं कि वहां से लड़कियों को निकलने में शर्म आती है। यदि कोई लड़की इन्हें कुछ कहती है तो यह लोग उन्हें भी गंदी गाली देने लगते हैं। जिस कारण लड़ाई अधिक बढ़ जाती है। फिर बालकनामा के पत्रकारों ने बातूनी रिपोर्टर को एवं अन्य बच्चों को बताया कि यदि तुम्हें कोई जानबूछ कर परेशान करता है तो आप चाइल्ड हेल्पलाइन नंबर 1098 पर कॉल करके अपनी परेशानी साझा कर सकते हैं।

कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती, ठान लो अगर मन में तो मेहनत बेकार नहीं होती

बातूनी रिपोर्टर लोकेश
बालकनामा रिपोर्टर असलम

जहाँ चाह होती है वहां राह जरूर मिल जाती है। ऐसे ही हमारे सड़क एवं कामकाजी बच्चे हैं जो कोई न कोई रास्ता बना लेते हैं अपनी मंजिल तक पहुंचने के लिए। ये बच्चे बहुत मेहनती होते हैं और अगर उन्हें एक मौका मिले पढ़ाई करने को तो यह बच्चे पूरे मन से पढ़ाई भी करते हैं। जब हमारे बालक नामा पत्रकारों ने परिवर्तित नाम लोकेश से मिले और उससे बात कि तो लोकेश ने बताया कि वह पलवल का रहने वाला है। उसकी माता जी साफ सफाई और खाना बनाने का काम करती हैं। लेकिन ज्यादा उम्र होने के

कारण वह बहुत कम घरों में ही काम करने जाती हैं और ज्यादार वो घर पर रहती हैं। उसके पिताजी भी पहले गार्ड की नौकरी करते थे, लेकिन 50 साल की उम्र होने के कारण कंपनी वालों ने उसके पिताजी को रिटायर कर दिया। जिस कारण लोकेश के कन्धों पर घर की पूरी जिम्मेदारी आ गई है। इतनी जिम्मेदारियों के बावजूद भी लोकेश ने अपनी पढ़ाई नहीं छोड़ी। वह सुबह 8 बजे से 2 बजे तक स्कूल जाता है और उसके बाद 3 बजे से कपड़ों की दुकान पर काम करता है और रात 9 बजे घर वापस आता है। अभी लोकेशन ने दसवीं के बोर्ड की परीक्षा दी है और वह दसवीं पास भी हो गया है।

लोकेश काम के साथ पढ़ाई भी करता है, लेकिन काम के कारण उसकी पढ़ाई ठीक से नहीं हो पाती है। फिर भी वह पूरी कोशिश कर रहा है कि काम भी करे और पढ़ाई भी क्योंकि उसको अपने घर का खर्चा भी चलाना है। लोकेशन का सपना है कि वह पढ़ लिखकर एक बहुत बड़ा इंजीनियर आने और अपने सपने को पूरा करने के लिए वह पूरी कोशिश कर रहा है।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

बारिश और आंधी तूफान से परेशान सड़कों के किनारे रहने वाले बच्चे

रिपोर्टर किशन

राज्य में लगातार हो रही बारिश से लोग बहुत परेशान हैं। बारिश होने की वजह से सड़क एवं कामकाजी बच्चों को बहुत सारी समस्याओं का सामना कर पड़ रहा है। उनको किस तरह की परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है, इस विषय पर पत्रकारों ने नोएडा सेक्टर 62 सेक्टर 101 सेक्टर 76 आदि झुग्गी बस्तियों के बच्चों से बात की। बच्चों ने बताया कि हम लोग झुग्गी में रहते हैं और बारिश काफी तेजी होने से हमारे घरों में पानी आने लगता है।

दिव्यांश ने बताया कि हमारी झुग्गी त्रिपाल से बनी हुई हैं और सड़क के किनारे हैं। सड़क के किनारे होने के कारण यहां पर पेड़ भी हैं। जब आंधी तूफान और बारिश तेज आती है तो ये पेड़ हमारी झुग्गी के ऊपर ही गिर जाते हैं। कुछ झुग्गियां तो ऐसे बानी हैं कि उनके बीच में पेड़ है। बीच में बड़ा पेड़ होने के कारण झुग्गी बनने में में भी उनको दिक्कत आती है और जब बारिश आती है तब पेड़ में से पानी नीचे गिरता है, जिस कारण झुग्गी में घर के अंदर भी बहुत सारा पानी भर जाता है। जब घर में पानी आ जाता है तो जो हमारे बिस्तर भीग जाते हैं और घर का सामान रखने में काफी दिक्कत होती है। घर में पानी भर जाता है तो हमारे स्कूल के कपड़े और कई किताबें, वह भी भीग जाती हैं। जिस कारण स्कूल जाने में दिक्कत आती है। इतना ही नहीं कभी-कभी वह किताबें गीली होने के कारण फट भी जाती हैं। जब हमारी झुग्गी में पानी भर जाता है तो हमें उसको अपने हाथों से निकालना पड़ता है।

सरकारी शौचालयों की अधूरी स्थितिः बच्चों को खुले में शौच करना पड़ रहा मजबूर

बालकनामा रिपोर्टर - काजल
बातूनी रिपोर्टर - संदीप

बालकनामा रिपोर्टर काजल ने जयपुर के विभिन्न बस्तियों का दौरा किया, जिसमें उन्होंने जयपुर की एक कच्ची बस्ती में रहने वाले बच्चों से उनकी समस्याओं और अनुभवों के बारे में चर्चा की। तब बातूनी रिपोर्टर संदीप ने बताया कि हमारी बस्ती में अधिकांश घरों में शौचालय नहीं है, जिससे बच्चों, घर की महिलाओं, लड़कियों, और पुरुषों को खुले में शौच करना पड़ता है। हालांकि सरकारी प्रक्रिया के तहत बस्ती में शौचालय बनाए गए हैं, जो कि लगभग पांच साल से अधूरे ही हैं, चुनावी समय में बस्ती के पार्षद बड़ी-बड़ी बातें करते हैं और हमेशा शौचालयों को सही करवाने का वादा करते हैं, लेकिन बाद में कोई ध्यान नहीं देता। इसके परिणामस्वरूप, बच्चे और स्थानीय लोग इस समस्या का सामना कर रहे हैं कि सरकार द्वारा अधूरे शौचालय छोड़ दिए गए हैं। इन शौचालयों का उपयोग बस्ती के लोग नहीं कर पा रहे हैं, और बस्ती में साफ-सफाई की भी बहुत कमी है, जिससे संक्रमण का खतरा बढ़ जाता है। साथ ही बच्चों के स्वास्थ्य को खतरा भी हो रहा है।

बढ़ते कदम में जुड़ने के बाद सपना हुआ पूरा

बातूनी रिपोर्टर अलीशा व रिपोर्टर किशन

आइए हम आज सबसे पहले बढ़ते कदम संगठन के बारे में जानते हैं। बढ़ते कदम सड़क एवं कामकाजी बच्चों का संगठन है जो 9 जुलाई, 2002 में देहरादून में 35 बच्चों के साथ शुरू हुआ था। अब बढ़ते कदम संगठन में १३,000 बच्चे हैं। बालकनामा के पत्रकार जब बढ़ते कदम का जन्मदिन सेलिब्रेट करने बच्चों के पास पहुंचे तो बच्चों ने खुशी-खुशी बढ़ते कदम का जन्मदिन सेलिब्रेट किया। इस अवसर पर बच्चों ने अपने मन की बात भी बताई। परिवर्तित नाम राखी ने बताया कि मैं 13 साल की हूं। मैं नोएडा में 4 साल से अपने माता-पिता के साथ रह रही हूँ। हम पहले अपने गांव में रहा करते थे। गांव में मैं सरकारी स्कूल में कक्षा 3 में पढ़ाई करती थी। लेकिन गांव में कारोबार ना होने के कारण हम लोग नोएडा आ गए और मेरा स्कूल से नाम कट गया। मैं यहां पर आकर कुछ साल घर पर रही, लेकिन मैं ट्यूशन जाया करती थी। जो मुझे नहीं आता था, वह मैंने अपने ट्यूशन में सीखा। कुछ दिन बाद मुझे चेतना संस्था के एक भैया मिले और उन्होंने मुझे बढ़ते कदम से जोड़ा। बढ़ते कदम से जुड़ने के बाद मुझे पढ़ाई करने का मौका मिला। मुझे जो पढ़ना नहीं आता था, वह मैंने सीखा और फिर कुछ दिन बाद मेरा स्कूल में कक्षा 4 में दाखिला हो गया। जब मेरा दाखिला हुआ तो मैं बहुत खुश हुई और मेरा सपना पूरा हो गया। मैंने सोचा भी नहीं था कि मैं दोबारा स्कूल में पढ़ पाऊंगी क्योंकि घर के काम काज करने में मेरा पूरा दिन निकल जाता था। अब सुबह-सुबह मैं घर का काम करके स्कूल जाती हूँ और स्कूल से आने के बाद बढ़ते कदम नन्हे परिंदे की गाड़ी पर भी पढ़ने के लिए जाती हूं।

स्वास्थ्य शिविर में बच्चों का टीकाकरण सफल, आयोजन में बड़ी उपस्थिति

बातूनी रिपोर्टर मीनाक्षी व रिपोर्टर संगीता लखनऊ

बालकनामा रिपोर्टर काजल ने जयपुर की एक कच्ची बस्ती का सर्वेक्षण किया और जानकारी प्राप्त हुई कि इस कच्ची बस्ती में 0 से 5 वर्ष तक के बच्चों के टीकाकरण के लिए एक शिविर आयोजित किया जा रहा है। हालांकि, बस्ती में कई परिवार ऐसे थे जो टीका लगवाने के लिए तैयार नहीं थे, उनका मानना था कि टीका लगाने से बच्चों को बुखार आएगा और वे चिढ़चिढ़े हो जाएंगे। अर्थात, बस्ती के लोगों में टीकाकरण के प्रति जागरूकता नहीं थी। इसके बाद, बस्ती में आंगनबाड़ी कार्यकताओं, एएनएम दीदी, और चेतना संस्था की दीदी ने बस्ती के लोगों को समझाया कि टीकाकरण बच्चों की सुरक्षा का कवच है, और टीका नहीं लगवाने से बच्चों को पोलियो, मलेरिया, छोटी और बड़ी माता (चिकन पॉक्स) जैसी बीमारियां हो सकती हैं। उन्होंने बताया कि टीकाकरण करवाने से बच्चों के बेहतर भविष्य और सुरक्षा की सुनिश्चित की जा सकती है। इस प्रयास का परिणामस्वरूप, 29 अगस्त 2023 को बस्ती में टीकाकरण का आयोजन हुआ और इस दौरान लगभग 30 बच्चों को पेंटा, डीपीटी, और अन्य टीके लगाए गए, जिससे बस्ती के लोगों ने छोटे और बड़े बच्चों को टीका लगवाया और अपनी सक्रिय भूमिका निभाई।

किराएदारों को यह सुविधा न मिलने पर कर सकते हैं कानूनी कार्यवाही

ब्यूरो रिपोर्ट

किराए के माकन में रहने वाले व्यक्ति इस खबर को ध्यान से पढ़ें और इस बात को जरूर जान लें कि यदि आप किराए के कमरे में रह रहे हैं तो आप मकान मालिक से बिजली का कनेक्शन, पीने का साफ पानी, पार्किंग और साफ बाथरूम आदि आवश्यक चीज की मांग कर सकते हैं। यदि मकान मालिक यह सब देने से मना करता है तो संबंधित किरायेदार उस पर कानूनी कार्रवाई कर सकता है। पत्रकारों ने नोएडा सेक्टर 5 की एक ऐसी बिल्डिंग में दौरा किया जहां पर 60 कमरे है। जब पत्रकारों की नजर उस बिल्डिंग के शौचालय में पड़ी तो वह बहुत गंदे हो रखे थे और बदबू भी आ रही थी। पत्रकारों ने उस बिल्डिंग में रह रहे बच्चों से बात की तो बच्चों ने बताते हुए कहा कि इस बिल्डिंग में जितने कमरे है, उसके अनुसार यहां पर एक लाइन से सिर्फ पांच बाथरूम ही बने हुए हैं। इन बाथरूम में ही 60 कमरे में रहने वाले लोग शौच करने के लिए जाते हैं। बिल्डिंग में रहने वाले अधिकतर लोग कभी-कभी सौच करने के बाद बाथरूम में पानी तक नहीं डालते, जिस कारण शौचालय काफी गंदा पड़ा रहता है। इस कारण अधिकतर लोग उस बाथरूम में शौच करने के लिए नहीं जाते हैं। पानी न डालने के कारण वह बाथरूम दिन पर दिन बदबू मारने लगता है। मकान मालिक को भी सफाई के कहा जाता है, लेकिन फिर भी वह बाथरूम साफ नहीं करवाता है। उस बाथरूम के बगल में ही हमारे कमरे भी हैं और जब हम खाना बनाते हैं या खाते हैं तो गंदी बदबू का सामना करना पड़ता है। जिस कारण बिल्डिंग में रहने वाले अधिकतर बच्चे भी बीमार हो रहे हैं।

लौट के बुद्धू घर को आए, गलत संगति में पड़कर, आजाद ने शुरू किया स्नेचिंग के काम

ब्यूरो रिपोर्ट

आपने यह तो सुना ही होगा कि जब हमें कोई अच्छी सीख देता है तो उस पर हम अमल नहीं करते हैं। लेकिन जब अपनी गलतियों के कारण हम मुसीबत में पड़ते हैं तब हमारी आँखें खुलती हैं। ऐसी ही एक घटना के शिकार हुआ आजाद। जब हमारे बालकनामा पत्रकारों ने घाटा की झुग्गियों का दौरा किया, तब हमारे पत्रकारों को कुछ बच्चों से पता चला कि यहां एक बच्चा जिसका आजाद है, वह बुरी संगति में आकर पूरी तरह से बिगड़ चुका है। पहले आजाद स्कूल पढ़ने जाता था, लेकिन पिताजी के घर से भाग जाने के कारण अब आजाद ट्रैक्टर मैं कचरा भरने का काम करता है। इस काम में कम पैसे मिलने के कारण आजाद लोगों की संगति पड़ गया। कुछ गलत बच्चे आजाद को अपने गैंग में शामिल करके उसके साथ स्नेचिंग का काम करते हैं। यह बच्चे आजाद को रात के 8 बजे ले जाते हैं। जब उसके घरवाले आजाद से पूछते हैं कि कहां जा रहा है तो यह बच्चे उसके घर वालों से बोलते हैं कि आज मेरा बर्थडे है इसलिए इसको लेकर जा रहे हैं। आजाद और यह दो बच्चे मिलकर टोटल तीन लोग हैं। यह तीनों लोग एक बाइक पर सवार होते हैं और हाईवे पर निकल जाते हैं। जैसे ही रात के 9 या 10 बज जाते हैं तो यह लोग देखते हैं कि कोई भी महिला या पुरुष अपने कान पर फोन लगा कर जा रहा होता है तो यह उनके कान से फोन छीन कर भाग जाते हैं यह लोग एक दिन में 12 फोन चुराते हैं और फिर उन्हें 3500 से 4000 रूपए में बेच देते हैं। एक दिन पुलिस वाले आ गए और आजाद को बहुत मारा। तब आजाद ने कबूल किया कि वह चोरी करने के काम करता हैं। इसके बाद आजाद को अकल आयी और उसकी आंखें खुली। उस दिन से आजाद गलत बच्चों की संगति से दूर हो गया। अभी भी यह बच्चे आजाद को यह काम करने के लिए प्रलोभन देते रहते हैं, लेकिन आजाद इन कामों से दूर होना चाहता है। अब आजाद 24 घंटा ऑफिस में चाय, कॉफी और साफ सफाई का काम करता है और माता जी की तबीयत खराब होने के कारण अब वह और भी ज्यादा मेहनत और लगन से अपना काम करता है और गलत संगति में भूल कर भी नहीं पड़ना चाहता है।

जयपुर की कच्ची बस्ती में बढ़ता हुआ नशे का जाल: 12वर्षीय मोनू ने की नशे की मुखबिरी

बालकनामा रिपोर्टर शबीर शा
बातूनी रिपोर्टर गोलू

बालकनामा रिपोर्टर शबीर ने जयपुर की एक कच्ची बस्ती का दौरा किया। पत्रकार शबीर को यह जानकारी मिली थी कि बच्चों को नशे के व्यापार में धकेला जा रहा है। इसी बीच बालकनामा रिपोर्टर शबीर की मुलाकात बस्ती में रहने वाले मोनू से हुई। जब बालकनामा रिपोर्टर ने मोनू से पूछा कि आप कैसे नशे के व्यापार में फंस गए। तब 12 वर्षीय मोनू ने बताया कि घर की हालत खराब होने के कारण नशे की मुखबिरी (रैकी) का काम करने लगा। बालक बताता है कि उसके चाचा ने उसे यहां काम पर लगा दिया। वह कैसे काम करता है, इस सवाल का जवाब बालक ने देते हुए बताया कि वह गली मे बैठ जाता है और इस बात का ध्यान रखता है कि पुलिस ना आ जाये। अगर पुलिस आती है तो वह भागकर अपने मालिक के यहां काम करने वालों को बता देता है, जिससे वो नशे का सामान छुपा देते है। बालकनामा रिपोर्टर ने पूछा कि इस काम को करने में डर नही लगता। तब मोनू ने कहा कि शुरू में डर लगता था पर अब नहीं लगता। क्योंकि बस्ती में बहुत से बच्चे यह काम करते हैं और मेरे चाचा भी करते हैं। इस काम को करने से मुझे प्रतिदिन के 300 रू मिलते हैं। लेकिन इस काम में बहुत खतरा रहता है और समस्या भी आती है। गर्मियों में धूप बहुत तेज पड़ती है और जहां मैं बैठता हूँ, वहां पर छत नहीं है इसलिए धूप सीधे सिर पर पड़ती है और पूरे दिन में खाने के लिए खाली आधा घण्टे का ही समय दिया जाता है। हमें सुबह ७ बजे ही काम पर बुला लेते हैं और रात को 10 बजे छुट्टी होती है। मोनू बताता है कि वह मुखबिरी की खबर देने दौड़ता है तो कई बार गिर भी जाता है। ऐसे अस्वस्थ वातावरण में काम करते करते बालक का कई प्रकार से शोषण होता है। बालक की पूरी बस्ती में नशे का गन्दा जाल ऐसे बुना गया है कि पूरा समुदाय वयस्क, महिलाओ के साथ साथ बच्चे भी इससे प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित है।

मिंटू: एक अद्भुत हौसले की कहानी - संघर्ष से लेकर सफलता की ओर

बातूनी रिपोर्टर मिंटू,
बालक नामा रिपोर्टर असलम

हरियाणा राज्य के पत्रकार असलम ने जब बादशाहपुर की बस्तियों का दौरा किया तो एक 16 वर्षीय बालक मिंटू से मुलाकात हुई। जब बालकनामा पत्रकार ने बातचीत किया तो पता चला कि मिंटू ने ब्लॉक कबड्डी चैंपियनशिप जीती है और अब वह स्टेट कबड्डी चैंपियनशिप में भाग लेना चाहता है! मिंटू ने अपनी परेशानी बालक नामा पत्रकार के साथ साझा किया कि जन्म प्रमाण पत्र ना होने के कारण वह कबड्डी खेल में भाग नहीं ले पा रहा है। उसने बताया कि कई जगह जन्म प्रमाण पत्र बनवाने के लिए आवेदन किया तो लोगों ने मुझे मना कर दिया। क्योंकि जन्म प्रमाण पत्र बनवाने के लिए मेरे पास कोई भी सपोर्टिंग डॉक्यूमेंट नहीं है! इस कठिन परिस्थिति में भी मिंटू ने हार नहीं मानी और 1 दिन उसे अरुण भैया मिले। अरुण भैया ने मिंटू की मदद की और उसका जन्म प्रमाण पत्र बनवा दिया है। जन्म प्रमाण पत्र बनने के बाद मिंटू बहुत खुश हुआ और स्टेट कबड्डी चैंपियनशिप की तैयारी करने में लग गया। स्टेट कबड्डी चैंपियनशिप जुलाई माह के आखिर में आयोजित होनी थी !जन्म प्रमाण पत्र बनने की वजह से मिंटू स्टेट कबड्डी चैंपियनशिप में भाग ले रहा है और ईश्वर से प्रार्थना करता है कि मैं कि टूर्नामेंट जीत जाऊं। मिंटू ने बालकनामा पत्रकार को बताया मेरे माता-पिता जीवित नहीं है। इसीलिए मैं हरियाणा में अपने चाचा जी के साथ रहता हूं तथा उनके घर में कुछ काम करता हूं जिससे मुझे पैसे मिलते हैं और मैं अपनी पढ़ाई पर खर्च कर लेता हूं। मेरे माता, पिता जी का सपना था कि मैं पढ़ लिखकर अच्छा और शिक्षित व्यक्ति बनो। जन्म प्रमाण पत्र बनने की वजह से मिंटू का सरकारी स्कूल में दाखिला हो गया है। वह पढ़ लिख कर अपने माता-पिता तथा स्कूल का नाम रोशन करना चाहता है।

संघर्ष से सफलता की ओर: अंकुश के हौसले को सलाम

बातूनी रिपोर्टर अंकुश, बालकनामा रिपोर्टर असलम

जैसा कि आपको पता ही होगा कि इस दुनिया में कुछ बड़ा बनने के लिए शिक्षा बहुत जरूरी है। इसी को देखते हुए जो हमारे बालकनामा पत्रकारों ने बादशहपुर की झुग्गियों का दौरा किया तो पत्रकारों को पता चला कि 16 वर्षीय बालक जो 11 कक्षा में पड़ता है और दसवीं में 81 प्रतिशत नंबर लाकर अच्छे से स्कूल में दाखिला करवा लिया परंतु दसवीं के बाद अगले स्कूल में जाने पर ज्यादा पैसे देने पड़े और अपने पढाई की आगे के खर्चे में सहयोग के लिए अंकुश ने सुबह अखबार बांटने का काम चालू कर दिया। जिससे कि अंकुश को प्रत्येक मास 2000 मिलते हैं और वह अखबार बांटने का काम सुबह 6:00 से 7:00 तक खत्म कर देता था। उसके बाद अंकुश 7:30 बजे नहा धोकर अपना 8:00 बजे तक स्कूल पहुंच जाता था। लेकिन ये सब सँभालने के चक्कर में उसकी नीदं भी पूरी नही हो पाती है और स्कूल में कई बार देर से पहुंचता है और देरी से स्कूल पहुंचने पर मार भी खाता है। फिर भी अंकुश पढ़ाई में इतना अच्छा है कि सुबह काम करने के बाद भी स्कूल में ध्यान से पढाई करता है और अपने अध्यापकों की बात मानता है।

अंकुश ने साझा किया कि 'मेरा एक सपना बिजनेसमैन बनना है और अपने पिताजी को सहयोग करना है क्योंकि वो दर्जी का कार्य करते और उससे ज्यादा कमाई नही हो पाती है और कई बार तो काम भी नही मिलता है। मुझे हमेशा डर लगा रहता है कि कहीं पैसों के आभाव में मेरी पढाई न छुट जाये। इसलिए मैंने सोचा कि मैं अपनी पढाई का खर्चा खुद वहां करूं और अब मैं अपने घर से 1 नहीं मांगता ।

पेट के लिए डर को भी भगाना पड़ता है

रिपोर्टर किशन

भारत में वर्तमान में महंगाई आसमान को छूती ही जा रही है। पर सड़क एवं कामकाजी बच्चों की क्या स्थिति है। अब आप महंगाई के नाम से तो जान ही गए होंगे कि हर एक एक चीज पर कितनी महंगाई बढ़ती जा रही है। यूपी में बात करें गैस सिलेंडर की तो वर्तमान में सो रुपए का मिल रहा है। क्या इतनी महंगाई में सड़क एवं कामकाजी बच्चे इतना महंगा गैस सिलेंडर खरीद पा रहे हैं। उनकी क्या स्थिति है?बालकनामा पत्रकारों ने नोएडा की झुग्गी बस्तियों में कुछ कामकाजी बच्चों से बात करने के दौरान इस विषय पर विस्तार से एक-एक करके जाना। एक 10 वर्ष बालक ने बताते हुए कहा की सिलिंडर इतना महंगा हो गया है की अब हमारे पास इतने पैसे नहीं है जिससे कि हम इतना महंगा सिलेंडर खरीद पाए। हम कैसे ना कैसे गुजारा कर ही लेते हैं हमारी झुग्गी बस्तियों के 2 किलोमीटर आगे एक श्मशान घाट है उस श्मशान घाट में जंगल ही जंगल है झुग्गी बस्ती में लगभग 40 से 50 बच्चे रोजाना श्मशान घाट में चूल्हे के लिए लकड़ी लेने के लिए जाते हैं। श्मशान घाट इतना डर लगता है कि कोई भी बच्चा अकेले जाने से वह तुरंत इंकार कर देता है। क्योंकि श्मशान घाट काफी डरावना होता है। बच्चों के माता-पिता कामकाज पर चले जाते हैं और खाना पकाना, और घर की जिम्मेदारी सारी इन बच्चों पर रहती है, इसीलिए इन्हें खुद जाना पड़ता है तो यह बच्चे अपने दोस्त सहेली आदि के साथ इकट्ठे होकर जाते हैं। श्मशान घाट में अनेक पेड़ों पर लोग अस्थियां टांग देते हैं और कुत्ते खींच खींच कर फाड़ देते हैं। और हड्डियां इधर-उधर फैला देते हैं। इस दौरान बच्चे इतना डर जाते हैं कि वह लकड़ी बीनने भी नहीं जाते हैं। 12 वर्ष बालिका ने बताया हमारा चूल्हा लकड़ी से ही जलता है। हम और जगह भी लकड़ी बीनने के लिए जाते हैं। परंतु लोग हमें मना कर कहते हैं कि शमशान घाट चले जाइए वहां कोई मना नहीं करेगा इसलिए लकड़ी लेने हमें श्मशान घाट आना पड़ता है।

क्या 'जीतू' का पक्के घर में रहने का कोई अधिकार नहीं ?

रिपोर्टर सरिता

जैसा कि आपको पता ही होगा इस मौसम में बहुत ज्यादा वर्षा होने के कारण जो निवासी झोपड़पट्टी में रहते थे। उनके घरों में पानी बहुत ज्यादा भर चुका है और तो और उनके घर टूट भी गए हैं। ऐसी एक खबर हमारे बालकनामा पत्रकारों को पता चला जब हमारे बालक नामा पत्रकारों ने एमआर टावर की झोपड़पट्टी का दौरा किया था। 12 वर्षीय जीतू ने बताया कि वह टीन से बने बने छोटे से घर में रहता है और ज्यादा वर्षा होने के कारण टीन के घर को बहुत ज्यादा नुकसान हो जाता है। इसके साथ ही साथ उसने साझा किया कि बहुत ज्यादा वर्षा होने के कारण पानी हमारे घरों में पानी घुस जाता है, जिससे हमारे घरों में पानी भर जाता है जिससे हमें घर में रहने में बहुत ज्यादा दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। और तो और जिस दिन बहुत ज्यादा से भी अधिक बारिश होती है। उससे हमारा घर टूटने लगता है और जिस कारण हमें खुले में बारिश में सोना पड़ता है। हमारे माता-पिता अनपढ़ होने के कारण मजदूरी करते हैं। इसलिए हम किराए के रूम पर नहीं रह सकते। क्योंकि किराए 3500 एक रूम का और हमारे परिवार वाले इतना तो महीने का कमाते ही है। इसलिए हम चाहते हैं कि हमें भी पक्का घर दिया जाए। क्योंकि मेरे परिवार वालों के पास कोई भी जमीन ना तो घर है। इसलिए हमें रोड के पास टीन के घरों में रहना पड़ता है। और तो और ऐसी बारिश होने के कारण हमें दर-दर भटकना पड़ता है। हम चाहते हैं कि हमारी कोई मदद करें।

यह पत्र सीमित वितरण के लिए है इस अंक में सभी चित्र बच्चों की अनुमति से प्रकाशित किए गए हैं

बालकनामा अखबार को प्रकाशित करने में हमारी मदद करने के लिए सरदार नगीना सिंह जी और परिवार तथा अभिनव इमिग्रेशन सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड का बहुत धन्यवाद। आप प्रकाशन में भी हमारी मदद कर सकते हैं। बालकनामा अखबार के प्रकाशन में आप भी सहयोग दे सकते हैं। संपर्क करें : info@chetnango.org

बढ़ते कदम , 31 , बेसमेंट , गौतम नगर , नई दिल्ली - 110049 द्वारा प्रकाशित। न्यूजलेटर सीमित वितरण के लिए। बच्चों के चित्र उनकी अनुमति से प्रकाशित।
समर्थन के लिए संपर्क करें -editorbalaknama@gmail.com फोन - 41644471